P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-8* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भारत–श्रीलंका आर्थिक सम्बन्ध

गुलाब चन्द्र मीना
सहआचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय पी0 जी0 कॉलेज,
बाँदीकुई,राजस्थान

सारांश

भारत–श्रीलंका आर्थिक सम्बन्ध शुरू से ही अच्छे रहे हैं क्योंकि श्रीलंका एक छोटा सा राष्ट्र है ओर भारत का पड़ोसी देश होने के नाते भारत श्रीलंका को आर्थिक सहायता प्रदान करता रहा है। भारत और श्रीलंका दोनों ही सरकारों ने वाणिज्य तथा आर्थिक क्षेत्रों में अपने संबंध मजबूत बनाने के उद्देश्य से अपने संयुक्त आर्थिक आयामों को विदेश मंत्रियों के स्तर पर संयुक्त आयोग में परिवर्तित करने का निर्णय किया।

यह संयुक्त आयोग दो उप आयोंगों में विभाजित होकर अपना कार्य करेगां एक उप आयोग का काम व्यापार, वित्त तथा उद्योग सम्बन्धी मामलों को देखना होगा। दूसरा उप आयोग सामाजिक व सांस्कृतिक तथा शैक्षिक मामलों की देखरेख करेगा। 1977 में दोनों देशों के बीच एक सांस्कृतिक करार पर हस्ताक्षर हुए भारत ने सामूहिक उपयोग की अनिवार्य वस्तुओं तथा मध्यवर्ती साज–सामान की खरीद के लिए श्रीलंका को 7 करोड़ रूपये का ऋण दिया।

मुख्य शब्द : भारत–श्रीलंका आर्थिक सम्बन्ध।

प्रस्तावना

भारत और श्रीलंका निरन्तर कोशिश करते रहे तथापि तरह–तरह के अनेक जटिल कारणों से इस सिलसिले में प्रगति उतनी नहीं हुई इस बात के कुछ अच्छे आसार नजर आये कि आगामी वर्षों में श्रीलंका के साथ हमारा आर्थिक सहयोग बढ़ेगा।

जनवरी 1981 में एक करार पर हस्ताक्षर हुए जिसके अन्तर्गत श्रीलंका के उद्यमकर्ता औद्योगिक क्षेत्र में भारत की क्षमताओं से अधिकाधिक अवगत होंगे।

भारत की वित्तीय सहायता से दोनों देशों के बीच सूक्ष्म तरंग सम्पर्क स्थापित किया गया।

भारत ने श्रीलंका को 10 करोड़ रूपये का एक और ऋण दिया। सांस्कृतिक क्षेत्र में क्रीड़ा और मंचीय कलाओं के क्षेत्र में आदान–प्रदान पहले की तरह चलता रहा।

अतः हम कह सकते हैं कि भारत और श्रीलंका को खाद्य सामग्री, दवाईयों, और आर्थिक सहायता समय–समय पर करता रहा है भारत सस्ती दर ऋण भी श्रीलंका को प्रदान करता रहता है क्योंकि भारत एक उदारवादी देश होने के कारण अपने पड़ोसी राष्ट्र को विशेष आर्थिक सहायता प्रदान करता रहा है। इस आधार पर दोनों ही देश आपसी सहयोग द्वारा आर्थिक सम्बन्धों को मजबूत बना सके।

मन्नार में तेल की खोज

दोनों ही देशों ने मन्नार में तेल निकालने के सम्बन्ध में भी महत्वपूर्ण प्रगति की। भारत सरकार को आशा है कि इस सम्बन्ध के तेल और प्राकृतिक गैस निगम और श्रीलंका के शिलोन पैट्रोलियम कार्पोरेशन के बीच शीघ्र ही एक समझौता हो जायेगा और गैस निकालने का काम प्रारम्भ हो जायेगा। भारत ने इस सहयोग के लिए अपनी सहमति दे दी है।

श्रीलंकाई सरकार दोनों सरकारों द्वारा तैयार किये गये मसौदे पर विचार करेगी। तेल और प्राकृतिक गैस आयोग की और से एक दल शीघ्र ही श्रीलंका की यात्रा करेगा। [6]

दक्षिण एशियाई सहयोग परिषद के सम्बन्ध में जब यह कहा जाता है कि यह परिषद असली मुद्दे की ओर बढ़ पाती है, तब यह भी कहा जाता है कि असली मुद्रा तो होता है आर्थिक सहयोग का निश्चित ही दोनों देशो ने इस क्षेत्र में भी अपने कदम बढ़ाए है। यह एक महत्वपूर्ण बात है।[7]

श्रीलंकाई सरकार ने भारतीय तेल निगम से भी यह आग्रह किया है। कि वह एक टीम कोलम्बों भेजे ताकि जिनकों माली तेल फार्म को फिर से शुरू करने के संबंन्ध में बातचीत की जा सके। भारत सरकार ने यह प्रस्ताव स्वीकार

कर लिया है। परन्तु श्रीलंकाई सरकार को फार्म को फिर चालू करने के सम्बन्ध में अन्मित निर्णय बाद में करेगी। [8]

यह भी उल्लेखनीय है कि दोनों सरकारों ने चाय के संयुक्त बाजार व्यवस्था के निर्माण पर भी अपनी सहमति व्यक्त की है। यह प्रस्ताव श्रीलंका की ओर से आया था और इसके कार्यान्वयन से दोनों देशों को लाभ होगा। श्रीलंका में अपने देश में निर्मित प्राथमिक वस्तुओं को भारतीय बाजार में पहुँचाने के सम्बन्ध में बातचीत करे। भारत ने स्पष्ट किया कि इस सम्बन्ध में सभी प्रकारों की रूकावटों को अब समाप्त कर दिया है। इस सम्बन्ध में भारत की सलाह भी काफी महत्वपूर्ण है कि दक्षेस के वृहत् परिप्रेक्ष्य में एक स्वतन्त्र बाजार का निर्माण किया जाए जहॉ ऐसी चीजों के माने जाने पर किसी प्रकार की कोई रूकावट ही न हो। श्रीलंका ने इस प्रस्ताव का पूर्ण समर्थन किया है। [9]

इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐसी बाते विश्वास के वातावरण में ही हो सकती हैं और दोनों देशों में होने वाली ऐसी बातों को देखने में यह साफ लगता है कि इनमें अविश्वास की खाई प्रायः समाप्त होगई है। और विश्वास के नये युग की शुरूआत हो गई है। [10]

अतः हम कह सकते हैं कि भारत और श्रीलंका दोनों के घनिष्ट आर्थिक सम्बन्ध रहे हैं। भारत सरकार ने श्रीलंका सरकार को निम्न कार्यों में सहयोग दिया है।

उद्योग धन्धे

भारत सरकार ने श्रीलंका सरकार को उद्योग धन्धों में महत्वपूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान की उद्योग धन्धों मे 15 प्रतिशत श्रमिक लगे हैं। जाफना में सूती कपड़ा मिल कारखाना भी भारत के सहयोग से निर्मित हुआ है, कुनैन, बनाने सीमेण्ट लगाने, तैयार करने, साबुन और तेजाब बनाने के भी कारखाने हैं। यहाँ पर कुटीर धन्धे भी आर्थिक सहायता द्वारा खोले गये हैं। [12]

दोनों ही सरकारों ने चाय के संयुक्त बाजार व्यवस्था के निर्माण पर भी अपनी सहमति व्यक्त की है दोनों देश मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय बाजार बनाने पर भी सहमत हुए हैं। [13]

यातायात

भारत सरकार द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान किये जाने से श्रीलंका सरकार को यातायात के साधन विकसित करने में भी सहायता प्रदान किया है।– जैसेः– श्रीलंका में यातायात का प्रमुख साधन रेल, और सड़के है। लंका की रेले चौड़ी पटरी वाली हैं और सरकार द्वारा चलाई जाती हैं। कोलम्बों रेल मार्ग का केन्द्र है। कोलम्बों से रेलमार्ग दक्षिण की ओर उत्तर में जाफना और पूर्वी में टिकोमाली तक जाते हैं। [14]

आयात निर्यात

भारत सरकार श्रीलंका को दवाईयाँ, खाद्य सामग्री, तेल चावल आटा पेट्रोल सूती कपड़ा श्रीलंका को निर्यात करता है।[15]

व्यापारिक सम्बन्ध

भारत और श्रीलंका दोनों देशों के बीच व्यापारिक सम्बन्ध भी महत्वपूर्ण है। दोनों देशों के सहयोग से मन्नार की खाड़ी में तेल निकालने पर सहमतों इसका उदाहरण है।

भारत और श्रीलंका दोनों ही देश आर्थिक सहयोग में भी घनिष्ठता और मैत्री के रहे है। 1977 में एक सांस्कृतिक करार पर हस्ताक्षर हुए जिसमें भरत ने 7 करोड़ का ऋण दिया जिससे श्रीलंका सरकार अपना विकास कर सके। तथा श्रीलंका को 10 करोड़ रूपयों का एक और ऋण भारत ने प्रदान किया आगामी वर्षों में श्रीलंका के साथ हमारा आर्थिक सहयोग बढ़ेगा। जिसके अर्न्तगत श्रीलंका के उद्यमकर्ता औद्योगिक क्षेत्र में भारत की क्षमताओं से अधिकाधिक अवगत होंगे। और दोनों देश आर्थिक सहयोग बढ़ा सकेंगे। तथा भारत ने श्रीलंका को पेट्रोलियम कार्पोरेशन के बीच शीघ्र ही एक समझौता हो जायेगा और गेस निकालने का काम प्रारम्भ हो जायेगा। भारत ने इस सहयोग के लिए आनी सहमति दे दी है।

निष्कर्ष

अतः हम कह सकते हैं कि भारत और श्रीलंका के आर्थिक सम्बन्ध ठीक हो रहे हैं। और भारत ने छोटे पड़ोसी राष्ट्र की परम्परा का निर्वाह करते हुए श्रीलंका को सभी श्रीलंका को सभी क्षेत्रों में आर्थिक सहयोग दिया है।

भारत व श्रीलंका के आर्थिक सम्बन्धी को सुधारने के लिए भारतीय प्रधान मत्री नरेन्द्र मोदी ने मार्च 2015 में श्रीलंका की यात्रा की तथा भारत श्रीलंका में आधाभूत संरचना विकसित करने पर जोर दिया व श्रीलंका के राष्ट्रपति मैत्रीमाला सिरिसेना ने मई 2016 में भारत की यात्रा की। तथा चल रही परियोजनाओं की समीक्षा की, श्रीलंका के प्रधानमंत्री रानील्ड विक्रम सिंह ने भारत की यात्राा अप्रैल 2017 में की। तथा दोनों देशों ने आर्थिक सम्बनघों को मजबूत करते हुए आर्थिक परियोजनाओं में सहयोग दस्तावेज पर हस्ताक्षर किये तथा भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मई 2017 में श्रीलंका की यात्रा की, कोलम्बों के आयोजित 14वें अर्न्तराष्ट्रीय बेसाक दिवस समारोह में भागीदारी की। तथा दोनों देशों ने आर्थिक सम्बन्धों को मजबूत करने पर जोर दिया गया।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *See S.U. Kodikara" Ceylon relations with India 1983 P.P. 203*
2. *Senate Debates, vol.19 (17August,1994) P.73*
3. *Sessional paper XXV, part III report of the C.W.E. commission of inquiry*
4. *Debates, house of representatives vol.47 cols 281-282*
5. *Lanka-Guardian Economics relations India-Srilanka P.87 May,1983*
6. *Lanka-Guardian-India- Srilanka Economics relations Jun,1984 P.7*
7. *The Hindusthan (New Delhi) Economics relation Indo-Srilanka P.3*
8. *The Time of India-Economics relation 1986-87 (May)*
9. *प्रगति मंजूषा– भारत– श्रीलंका सम्बन्ध आर्थिक क्षेत्र में पेज 87 जून,1986*
10. *प्रतियोगिता दर्पण–जुलाई 1986, भारत–श्रीलंका–आर्थिक सम्बन्ध।*